

---

# Vakratunda Stuti by Matsarasura

वक्रतुण्डस्तुतिः मत्सरासुरेश

## Document Information

---

Text title : Vakratunda Stuti by Matsarasura

File name : vakratuNDastutiHmatsarAsureNa.itx

Category : ganesha

Location : doc\_ganesha

Transliterated by : Ajit Krishnan

Proofread by : Ajit Krishnan, PSA Easwaran

Description/comments : Mudgalapurana, Khanda 1, Adhyaya 38

Latest update : April 23, 2020

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 31, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Vakratunda Stuti by Matsarasura

---

### वक्रतुण्डस्तुतिः मत्सरासुरेश

---



मत्सरासुर उवाच -

नमामि वक्रतुण्डं य यतुष्यादं यतुःपरम् ।

यतुर्द्वैलविडीनं य भिन्दुमात्रे व्यवस्थितम् ॥ ३९ ॥

साकारं य निराकारं मायारूपधरं प्रभुम् ।

नमामि मायिनं तं य मायाडीनस्वरूपकम् ॥ ४० ॥

जगन्मयं य तद्धीनं सर्वकामप्रपूरकम् ।

ब्रह्मभूयप्रदं यैव नमामि गणनायकम् ॥ ४१ ॥

सिंहाशुभं यतुर्बाहुं विघ्ननाशं नमामि य ।

सिद्धिबुद्धिपतिं यैव सिद्धिबुद्धिप्रदायकम् ॥ ४२ ॥

अनन्तलीलया युक्तं लीलाडीनं नमामि तम् ।

अव्यक्तं व्यक्तरूपं वै नमामि स्वदृष्टिस्थितम् ॥ ४३ ॥

वेदान्तवेधं सज्योतिर्ज्योतिषामपि भासकम् ।

नमामि सख्यिदानन्देऽलरूपं जगाननम् ॥ ४४ ॥

योगिनां दृष्टि संस्थं य योगिभ्यो योगदायकम् ।

भावाभावमयं देवं नमामि भववर्जितम् ॥ ४५ ॥

सर्वत्र पक्षडीनं तं सर्वपक्षधरं प्रभुम् ।

नमामि वक्रतुण्डाख्यं ब्रह्मब्रह्माधिपं विभुम् ॥ ४६ ॥

अडो भाग्यमडो भाग्यं येन दृष्टो गजाननः ।

सर्वाकारनिराकारडीनोऽयं वक्रतुण्डकः ॥ ४७ ॥

शरणं ते प्रपन्नोऽस्मि पाडि मां भक्तवत्सल ।

प्रवणं त्वत्पदे नित्यं संसारोत्तारणैषिणम् ॥ ४८ ॥

इति मत्सरासुरेशप्रोक्ता वक्रतुण्डस्तुतिः समाप्ता । १.३८


Encoded by Ajit Krishnan

Proofread by Ajit Krishnan, PSA Easwaran

---

——  
*Vakratunda Stuti by Matsarasura*

pdf was typeset on May 31, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

